Research Journal of Language, Literature and Humanities _____ISSN 2348-6252
Vol. **4(7),** 1-4, November **(2017)** *Res. J. Lang. Lit. Humanities*

राजेंद्र यादव एवं सुरेन्द्र वर्मा के उपन्यास साहित्य का वस्तुपरक तुलनात्मक अध्ययन

रविन्द्र पवार
शासकीय महाविद्यालय, पानसेमल, जिला बड़वानी (म.प्र.), 451881, भारत
pawarravindra201@gmail.com

Available online at: www.isca.in, www.isca.me
Received 27th July 2017, revised 1st November 2017, accepted 15th November 2017

शोध सार

समकालीन हिंदी कथा साहित्य की पहचान जिन कथाकारों से बननी शुरू हुई, उनमे कथाकार राजेंद्र यादव एवं सुरेन्द्र वर्मा अग्रणी हैं! स्वातंत्र्योतर हिंदी कथा साहित्य की दशा और दिशा को समझने के लिए इनके साहित्य से जुड़ना अनिवार्यता बन गया! उनकी बेबाक टिप्पणियों ने जहाँ कथा साहित्य को धार दी, वहीं उपेक्षितों एवं शोषितों के प्रति यथार्थ से जुड़ी सच्ची संवेदना ने स्वतंत्रता के बाद की जिजीविषा को वाणी दी है! ये ऐसे रचनाकार हैं, जिन्होंने साठोत्तरीय कथा साहित्य को वायवी कल्पना से हटाकर ठोस जमीन दी, जहाँ सामाजिक बदलाव के प्रति ललक और प्रेरणा विद्यमान हैं! इसीलिए कथाकार - द्वय साठोत्तरीय भारत की सही तस्वीर प्रस्तुत करने वाले ऐसे रचनाधर्मी हैं, जिनमें आजादी के बाद आये बदलाव की सही तस्वीर तो है ही, साथ ही राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक परिवर्तनों के बजाय नकारापन के विरुद्ध आक्रोश भी है, ऐसा आक्रोश, जिसमें बिताई कुंठा के स्थान पर संघर्ष चेतना है, संघर्षशीलता एवं क्रांतिकारिता हैं! वे कोरे प्रगतिवादी नहीं, परिवेश से सम्प्रक्त संवेदनशील और जागरूक प्रगतिवादी रचनाकार हैं! वे निरे आशावादी नहीं, वरन परिस्थितियों से जूझने के लिए बुनियादी व्यवस्था के विरुद्ध बगावत मुद्रा के रचनाकार हैं! इसीलिए राजेंद्र यादव एवं सुरेन्द्र वर्मा शहरी मध्यमवर्ग से लेकर ग्राम भित्तिक जीवन के पारखी रचनाकार हैं! सिध्दांत और मनोविज्ञान उनकी रचनाओं में स्वतः स्फूर्त हैं, उनकी अपनी रचनाधर्मिता संवादी नहीं है!

शब्दकुंजिया: कथासाहित्य, उपन्यास, रचनाधर्मिता, आक्रोश, कुंठा, संघर्षचेतना!

प्रस्तावना

उपन्यासकार - द्वय के उपन्यासों के कथ्यों का साम्य और वैषम्य को दिखलाना ही इस शोधपत्र का ध्येय है! यद्यपि राजेंद्र यादव के कुल सात उपन्यास हैं, जबकि सुरेन्द्र वर्मा के केवल तीन, इस प्रकार उपन्यासों की संख्या में काफी अंतर है, तथापि जहां पर एक कथाकार की दूसरे कथाकार से समानता और असमानता नजर आयी, उसे वहीं तुलना की दृष्टि से चित्रित किया है!

उपन्यासकार - द्वय के उपन्यास साहित्य का वस्तुपरक तुलनात्मक अध्ययन -

चूँकि दोनों ही कथाकार लेखन की दृष्टि और कालावधि की दृष्टि से परस्पर समकालीन हैं! तथा समकालीन उपन्यासकारों की श्रंखला में अपनी जबरदस्त पहचान स्थापित किये हुए हैं! दोनों ही कथाकार साठोत्तर काल के रचनाकार हैं और इसी कालावधि के देशकाल को इन्होंने अपनी कृतियों में कथावस्तु के रूप में उठाया है! समस्याएं सूक्ष्म और व्यापक, स्थूल और सूक्ष्म, आंतरिक और बाह्य हो सकती हैं!

राजेंद्र यादव के प्रथम उपन्यास 'सारा आकास' का नायक समर युवा, शिक्षित और बेरोजगार हैं! माता पिता उसका विवाह सुशिक्षित और सुघड़ स्त्री प्रभा से कर देते हैं और उपन्यास अपने देशकाल के थपेड़ों को झेलता हुआ चरम पर पहुँच जाता हैं! और समर घर से भागने के लिए रेलवे स्टेशन पर जाता है तथा अनिर्णय की स्थिति में भाग नहीं पाता! जब इसी उहापोह में घबराकर वह ऊपर देखता है, "सारा आकाश डग डग करके घूमने लगता है! सारा आकाश"[1]राजेंद्र यादव ने कथावस्तु के बीच के विस्तार में समर और प्रभा का मनमुटाव, समर के माता पिता की महत्वाकांक्षाएं और समर की बहिन मुन्नी की ससुराल द्वारा हत्या के प्रसंग लिखकर उपन्यास को यथार्थपरक, कौतूहलप्रद एवं सहज बनाने का प्रयास किया है! कथानक की प्रस्तुति

राजेंद्र यादव द्वारा बखूबी की गयी है! कथानक में प्रारंभ, मध्य और चरम आसानी से ढूंढे जा सकते हैं! कथानक का विन्यास इतना क्रमबध्द और सहज है कि पाठक एक बरगी इस भ्रम में भी पड़ सकता हैं कि वह प्रेमचंद का ही कोई उपन्यास पढ़ रहा है! उपन्यासकार ने जिस कथ्य को चुना है वह किसी एक का नहीं वरन सभी मध्य और निम्न-मध्य वर्ग का है! कथाकार ने बेरोजगारी, जर्जर रूढ़िवादी, दहेज प्रथा जैसी समस्याओं से जन्मी युवा मन की निराशा का सहज और यथातथ्य अंकन किया है! यह कहना कि "राजेंद्र यादव के लिए 'लेखन' सहज नहीं, प्रयत्नपूर्वक साधी गयी एक 'प्रक्रिया' है! राजेंद्र यादव कथ्य और दृष्टी"[2] अस्वाभाविक प्रतीत होता है! राजेंद्र के सभी उपन्यासों के कथानक 'सायास' नहीं सहज हैं!

सुरेन्द्र वर्मा भी इसी प्रकार के कथ्य को लेकर चलते हैं! उनके प्रथम उपन्यास 'अँधेरे से परे' युवा पीढ़ी की बेरोजगारी, किंकर्तव्यविमूढ़ता और दिग्भ्रम का देशकाल व्यंजित हुआ है! 'सारा आकास' में यदि समर बेरोजगारी के भयावह संकट से जूझ रहा है तो 'अंधेरे से परे' का नायक एक और अपने पारिवारिक कलह से जूझ रहा है तो दूसरी ओर दिल्ली जैसे महानगर में बेरोजगारी केश्राप से ग्रसित है! जित्तन की पत्नी बिन्दो उसे कई बार ताने देती हैं, "ससुराल में इस तरह रहते हुए तुम्हें कोई जलालत महसूस नहीं होती? अंधेरे से परे"[3] वस्तुतः 'सारा आकास' के समर और 'अंधेरे से परे' के गुलशन और जित्तन में पूरा-पूरा साम्य है! ये सभी पात्र परिवार और समाज से अभिशप्त हैं! हाँ 'अंधेरे से परे'का नायक 'सारा आकाश' के समर से इन अर्थों में पीछे हैं कि जित्तन बहुत अधिक कुंठित और दिग्भ्रमित हैं, जबकि समर सघर्षों केदौरान भी संस्कारों से बंधा हुआ है!

इस प्रकार सुरेन्द्र वर्मा कृत 'अंधेरे से परे' उपन्यास जहाँ आधुनिक विसंगतियों और विडम्बनाओं को रेखांकित करता हैं, वहीं राजेंद्र यादव कृत 'सारा आकाश' जर्जर रुढ़िवादी मानसिकता की खोल से निकलकर प्रगतिशील मूल्यों की ओर अग्रसर होने की छटपटाहट को दर्शाता है! यह आसानी से स्वीकार किया जा सकता है कि दोनों ही उपन्यास अपने समय से आगे की ओर कूच करने का प्रयास है! मेरे विचार से 'सारा आकाश' की तुलना में 'अंधेरे से परे' अपरिपक्व रचना हैं, क्योंकि इस उपन्यास में यौन-जनित कुंठाओं का अतिरेकपूर्ण चित्रण भी उपन्यास को 'कामशास्त्र' की पुस्तक सिद्ध करता हुआ प्रतीत होता है! भारतीय मानसिकता का कोई भी पाठक ऐसे उपन्यास का हृदय से स्वागत करेगा यह संदिग्ध ही लगता है!

'उखड़े हुए लोग' का कथानक राजेंद्र यादव के पूर्ववर्ती उपन्यासों 'त्यागपत्र', 'सिंह सेनापति', 'बाणभट्ट की आत्मकथा', 'नदी के द्वीप' की तरह ही यथार्थ है! यह बात अलग है कि राजेंद्र यादव सच को 'सच'कहकर पूर्ववर्ती उपन्यासकारों की तरह पाठक को विश्वास में लेने की आस्था नहीं रखते! कथा में नायक की इमेज बदली है, धीरोदात्त की जगह आम आदमी आ गया है तथा परम्परागत खलनायक का बिम्ब भी टुटा है! देशबंधु भी बाहर से आदर्श दिखाई देता है उसका सिद्धांत है, "विचार हमेशा ऊँचे रखो और माथा नीचा! यही चीज है जो चरित्र को बनाती है!और चरित्र वह चीज है, जो आदमी को लाख मुसीबतों में भी बचाता रहा है! उखड़े हुए लोग"[4]राजेंद्र यादव का यह आत्मविश्वास ही है कि वे कथानक को पाठक की कसौटी पर कसने के लिए इस तरह के बयान जारी करते हैं! इसीलिए उन्होंने कहा भी है कि "अपराधी हूँ कि 'सत्य की खोज' के इस युग में ऐसी कहानी सुनाने बैठा हूँ, जिसका सत्य से कोई लेना-देना नहीं है, 'सत्य' पाने और 'सत्य दर्शन' का जिसे कोई दावा या मुगालता भी नहीं, हर पात्र काल्पनिक और हर घटना गढ़ी हुई – वार्तालाप और कथानक सब हवाई! राजेंद्र यादव - कथा यात्रा"[5] निश्चय ही ऐसे हलफनामे का अर्थ यह है कि राजेंद्र यादव यह भलीभांति जानते हैं कि खुद पाठक इस आलोच्य उपन्यास के कथानक की सत्यता, स्वाभाविकता और प्रवृत्ति को परख लेंगे! वे उपन्यास की सत्यता का परवर्ती उपन्यासकारों की तरह दावा इसलिए नहीं करते कि वास्तविकता और सत्यता की परख करने की दृष्टि पाठक के पास है और पाठक स्वयं इसे अपनी कसौटी पर परखने में सक्षम है! "कुछ आलोचकों के हिसाब से राजेंद्र यादव की उपन्यासकला का उद्देश्य प्रगतिवादी चिंतन के आधर पर मध्यमवर्गीय समाज के पारिवारिक जीवन का विश्लेषण तथा चित्रण करना है! "हिंदी उपन्यास"[6]

'कुलटा' उपन्यास का कथानक दाम्पत्य जीवन पर आधारित है! दाम्पत्य जीवन के तनाव के बारीक़ से बारीक़ रेशों को लेकर यादव ने कई अच्छी कहानियां लिखी हैं! कहीं दोनों के वर्गीय संस्कारों की टकराहट उन्हें उलझन में डाले रहती है तो कहीं किसी तीसरे के प्रवेश की आहट उनके बीच दरार डाल देती है! चाहे 'टूटना' हो या 'पुराने नाले पर नया फ्लेट' इनमें दाम्पत्य जीवन का 'तनाव' विस्फोट के निकट पहुंचा हुआ होकर भी रागात्मक लगाव से एकदम शून्य नहीं है, लेकिन 'कुलटा' में तेजपाल और मिसेज तेजपाल के बीच जो कुछ घट रहा होता है, वह तनाव न होकर बल्कि रस्साकसी जैसी कोई चीज है! मिसेज तेजपाल खुद अनुभव करती है "पर उन लोगों ने मेरा बड़ा नुकसान कर दिया! अब अगर मेरी कोई इच्छा पूरी नहीं होती तो मन होता है गोली मार लूँ! मन्त्रविद्ध और कुलटा"[7] 'टूटना' की लीना अपने

सम्मान पर चोट बर्दास्त नहीं कर पाती और बरसों पति से अलग रहती है! तेजपाल को छोड़कर चले जाना उस प्रतिक्रिया की चरम सीमा है!

बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक के अंतिम वर्षों में प्रकाशित 'मुझे चाँद चाहिए' इस शताब्दी का सर्वाधिक चर्चित उपन्यास है! इस उपन्यास का कथानक विस्तृत है, किन्तु कथ्य अत्यधिक सुधि आलोचकों और बुद्धिजीवियों को निश्चय ही रास नहीं आएगा! उपन्यासकार ने यद्यपि कथासूत्र को सुदृढ़ता प्रदान करने के लिए संस्कृत नाट्यकार – कालिदास, शुद्रक, पश्चिमी नाट्यकारों – चैखव, बेस्त, अल्बेयर, कामू के नाटकों का न सिर्फ अध्ययन किया अपितु उसे कहीं – कहीं उपन्यास में चित्रित भी किया है! निश्चय ही यह उपन्यासकार की लगनशील और परिश्रमी मनोवृत्ति का परिचायक है! उपन्यासकार को उपन्यास लिखने की प्रेरणा कालिगुला से प्राप्त हुई है! सुरेन्द्र वर्मा ने 'मुझे चाँद चाहिए' उपन्यास के प्रारम्भ में कालिगुला के कथन को उद्धृत कियाहै! वस्तुतः रचनाकार के मानस से रचना यूँ ही नहीं प्रसूत होती है वरन उसके पीछे या तो तीव्र अनुभूति की सघनता होती है या किसी रचनाकार की पंक्तियाँ या रचनाकर्म या अभिव्यक्ति से वह प्रेरणा पाता है! दिव्या कात्याल ने वर्षा से कहा "तुम्हें अपनी अभिव्यक्ति के लिए एक माध्यम चाहिए! वह क्या होगा, यह मैं अभी पक्के तौर पर नहीं कह सकती! पर एक बार रंगमंच की कोशिश कर लेने में कोई हर्ज नहीं!मुझे चाँद चाहिए"[8]राजेंद्र यादव के 'सारा आकाश' उपन्यास को हम इस बात की पुष्टि के रूप में ग्रहण कर सकते हैं!

'शह और मात' दूसरे प्यार की जटिल और कटु कहानी है, जहाँ अपराध भावना से पीड़ित प्रत्येक पात्र अपना पुनरान्वेषण करता है और अंत में अपने को यन्त्रणादायक भ्रांति और छलना से घिरे पाता है! 'शह और मात' हिंदी के विशिष्ट उपन्यासों में से एक है! यह एक शुद्ध मनोवैज्ञानिक उपन्यास है! 'शह और मात' में उदय के संपर्क में आने के बाद सुजाता की इक्यावन दिनों की मनस्थिति को बहुत गहराई और फैलाव में जाकर उभारा गया है! काल की दृष्टि से सोमवार, 3 जून से मंगलवार तेईस जुलाई तक की मानसिकता डायरी के बहाने सामने आयी है! लेकिन इन इक्यावन दिनों में डायरी केवल पैंतीस दिन लिखी गयी है! हिंदी उपन्यास - विविध आयाम"[9]'अनदेखे अनजान पुल'के पात्र ऐसे हैं जो अनदेखे अनजान पुल पर भटकते रहते हैं! जहाँ उनका अपना कोई ठौर ठिकाना नहीं है! जीवन के उल्लास से जुड़ा सौन्दर्य मनुष्य की आवश्यकता है! जिसकी आँखों में कोई सुन्दर सपना न होगा, जिसके मन में कोई सुन्दर स्मृति न हो तो वह क्यों जिएगा? अनदेखे अनजान पुल"[10] अन्य उपन्यासों की तरह यह उपन्यास भी प्रणयानुभूति के एक अछूते संदर्भ को उद्घाटित करता है!

'मुझे चाँद चाहिए' जैसे महान उपन्यास लिखने के बाद 'दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता' लिखने के पीछे लेखक के क्या अनुभव रहे होंगे, इसका सहज अनुमान तो नहीं लगाया जा सकता, परन्तु यह कहा जा सकता है कि यह उपन्यास अपने समय से बहुत आगे निकल गया है! उच्चकोटि के साहित्य सृजन के बाद इस तरह का रोमांचक उपन्यास लिखना कुछ समझ में नहीं आता! यद्यपि रोमांचक उपन्यस तो रेलवे स्टेशनों पर बहुत मिल जायेंगे तथापि वे क्षणिक प्रभावित करने वाले होंगे, परन्तु क्या 'दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता' उपन्यास के द्वारा लेखक पाठक को क्षणिक आनंद देना चाहता है या फिर 'मुझे चाँद चाहिए' जैसे उपन्यास को पढ़ने के बाद पाठक उसे जीना चाहता है, उसके अनुसार बनना चाहता है? जबकि वास्तविकता तो यह है कि 'दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता' उपन्यास पढ़ने के बाद पाठक उसके पात्रों से घृणा कर भूलकर भी उस राह पर चलने का प्रयास नहीं करेगा जिस राह पर उपन्यास के पात्र चलते हैं!

'दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता' उपन्यास में सुरेन्द्र वर्मा एक नये कथ्य को लेकर उपस्थित हुए हैं! "उपभोक्ता समाज में जीने की एक ही शर्त है – अपनी किसी योग्यता को बाजार में बेच पाना! छोटे बाजार में छोटी कीमत, बड़े बाजार में ऊँची कीमत! अच्छी कीमत पाने के लिए बाजार की समझ जरुरी है! ऊँची कीमत से ही सरप्लस, अधिशेष बनेगा और धन का संचय हो सकेगा! इससे ऊँची जीवन शैली और सुख तो प्राप्त हो जाता है, लेकिन बाजार अपनी पूरी कीमत वसूलता है – चाहे गन्ने की तरह निचोड़ना ही क्यों न पड़े! दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता, फ्लेप से"[11]

'मन्त्रविद्ध' में एक प्रेम प्रसंग के माध्यम से आधुनिक महानगरीय परिवेश में सम्बन्धों के बनने, तनने और बिगाड़ की हद तक पहुंच जाने का अक्स उभरा है! बकौल उपन्यासकार इसे कितनी ही कथा – रुढियों से लड़ते हुए लिखा गया है! इस कथन से यह भ्रम सम्भावित है कि 'मन्त्रविद्ध' का महत्व केवल शिल्पगत वैशिष्ट्य के लिहाज से है! यकीनन इसके शिल्प में नयापन है!".....इसमें घटना या घटनाएँ नहीं है, कहानी न सिर्फ व्यक्ति के भीतर चलती है, न बाहर, बल्कि दोनों स्तरों पर चलती है! इसमें एक ही स्थिति के कई पहलू है, मानों सिक्के को उलट – पुलट करके उसके हिस्से को देखा गया हो! राजेंद्र यादव – कथा यात्रा"[5] इसीलिए रतनलाल शर्मा इसे उपन्यास कहना चाहते हैं! लेकिन कथन पद्धति का यह नयापन बिलकुल बेमानी होता, यदि 'मन्त्रविद्ध' के 'कथ्य' में जीवन की वह प्रामाणिकता नहीं होती, जिसे यादव समय की प्रामाणिकता कहकर सम्भोधित करते हैं!

'एक इंच मुस्कान' परिणय सूत्र से बंधे कथाकार – युगल राजेंद्र यादव और मन्नू भंडारी का सहयोगी रूप से लिखित एक अत्यंत रोचक उपन्यास है! एक प्रयोग और एक श्रेष्ठ कथाकृति, दोनों ही दृष्टियों से यह एक सफल रचना है! "एक इंच मुस्कान सन 1962 ई. में प्रकाशित हुआ था! 'एक प्रबुद्ध व्यक्ति के आत्मान्वेषण' के इरादे से लिए गए 'एक इंच मुस्कान' को यादव ने 'त्रिकोणीय उपन्यासों से हटाने की कोशिश की है! एक इंच मुस्कान"[12] अब तक इस प्रकार से प्रयोग प्रायः असफल सिद्ध हुए थे, लेकिन 'एक इंच मुस्कान' की सबसे बड़ी विशेषता यह है की प्रभाव, गठन, और प्रवाह की दृष्टि से यह पहले एक श्रेष्ठ उपन्यास है और बाद में एक साहित्यिक प्रयोग! इसकी सफलता का एक प्रमाण यह भी है कि उपन्यास से अब तक अनेक संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं!

निष्कर्ष

इस प्रकार उपन्यासकार – द्वय के उपन्यास साहित्य के कथ्य में विविध प्रकार की विविधताएँ प्रतीत हुई है! अतः निश्चित रूप से यह कहना अनुचित होगा कि दोनों ही उपन्यासकार अपने उपन्यासों में विविध प्रकार के कथ्य लेकर आयें हैं! उनके इस योगदान को हिंदी साहित्य के पाठक सदैव स्मरण करेंगे!

सन्दर्भ ग्रंथ

1. चंद्रभानु सोनवणे (1977) हिंदी उपन्यास – विविध आयाम, पृ. 172, पुस्तक संस्थान, कानपूर
2. राजेंद्र यादव (1994) अनदेखे अनजान पुल, पृ. 143, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा.लि. 2/38, अंसारी मार्ग, दरियागंज नई दिल्ली – 02
3. राजेंद्र यादव (2000) एक इंच मुस्कान, पृ. 276, राजपाल एंड संस, 1590, मदरसा रोड़, कश्मीरी गेट, दिल्ली – 06
4. राजेंद्र यादव (1995) मन्त्रविद्ध और कुलटा, पृ. 139, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा.लि. 2/38, अंसारी मार्ग, दरियागंज नई दिल्ली – 02
5. राजेंद्र यादव (1998) सारा आकाश, पृ. 244, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा.लि. 2/38, अंसारी मार्ग, दरियागंज नई दिल्ली – 02
6. राजेंद्र यादव (1956) उखड़े हुए लोग, पृ. 59, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा.लि. 2/38, अंसारी मार्ग, दरियागंज नई दिल्ली – 02
7. सुरेन्द्र वर्मा (1980) अंधेरे से परे, पृ. 13, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, 23, दरियागंज, नई दिल्ली– 02
8. सुरेन्द्र वर्मा (2000) दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता, फ्लेप से, राधाकृष्ण प्रकाशन, प्रा.लि., 2/38, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली – 02
9. सुरेन्द्र वर्मा (1999) मुझे चाँद चाहिए, पृ. 28, राधाकृष्ण प्रकाशन, प्रा.लि., 2/38, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली – 02
10. सुषमा धवन (1961) हिंदी उपन्यास, पृ. 319, राजकमल प्रा. नईदिल्ली– 48
11. शशिकला त्रिपाठी (1955) राजेंद्र यादव – कथ्य और दृष्टि, पृ. 139, नीलकंठ प्रकाशन, 1/1079, ई महरौली, नई दिल्ली – 110030
12. वेदप्रकाश अमिताभ (1982) राजेंद्र यादव – कथा यात्रा, पृ. 21 एवं 61, गिरनार प्रकाशन, पिलानीगंज मेहसाणा (उ.गुजरात)